



...
...
...
...
...
...

॥ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धाय॥ ॥ॐ आः हूं श्रीमद्भुक्तस्त्वसुद्गुप्तेवपचनका कः
मलाय संभ्यक्कृष्णनारुवा सुनक जाय नमो हूं नमस्तु ३ नमो नमः रुक्मा हं
त्वां नमस्यामिगुप्ते नार्थप्रसिद्धि मे ॥ वैद्य रुक्माधि सुमग्न संताल यंजमि सुयं सु
हुं प्रयंत्युसा दे नममायकृष्णनसंरुव ॥ श्रीमन्नवज्जदाका यजकिनीचक्रवर्ति
नै ॥ यंचक्रनविकाह्मयग्राह्मयजगती नमः ॥ यावंगवज्जगति न्याचिं नसै

१

कल्पवैदना लोकाकृष्यप्रवर्तिन्यस्मावर्तिन्या नमः सदा ॥ॐ स्वरावशुद्रास
वधमाहं स्वरावशुद्राहं शुभं गांरूपनवज्जस्वरावात्मकाहं ॥ॐ आः हूं ॥ मटि
ग्याका नहाशुभं गांरावयत् ॥ श्रीका नमद्वयज्ञानं हं काय हं शुभं नृकाय
मयगगन्यूरं कका नहाकचिस्थि नै ॥ॐ सर्वस्त्वा ज्ञानहा हं गां शुक्रवर्गदि
शुभं संवत्समात्मानं लवधत् ॥ नदनुकनरं धमदकिहाहं रुक्माका नहास

यमधुलः वामहस्तकाजहा चंद्रमलं ॥ ॐ हं ॥ चोला ॥ नमहि ॥ दधूला ॥ स्वाहा ॥
 ॥ अंगुला ॥ वाषट् ॥ चला ॥ हुं हुं हो ॥ काला ॥ रुट् २ हं ॥ पचिं चोकादको ॥ द
 पास ॥ ॐ वं ॥ चोला ॥ हां यो ॥ दधूला ॥ हुं मां ॥ अंगुला ॥ ऊं ऊं ॥ चला ॥ हुं हुं हो
 ॥ काला ॥ रुट् २ हं ॥ पचिं चोकादको ॥ ॐ हुं स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हा स्वाहा ॥ घंघु ॥ क
 मलावर्तन गौरवा ॥ ध्यान ॥ ॐ श्री वज्र हे हे पूजक हुं रुट् जकिनी गाल सम्ब नः

२

स्वाहा ॥ पं आय चान पूजा ॥ प्रोक्तमहं ॥ ॐ स्वधु जा हं रुट् ॥ ॐ स्वधु जा हं सर्व
 विज्ञान नूत्सा नमं हुं ॥ गंध ॥ ॐ वज्र गंध स्वाहा ॥ पूष्य ॥ ॐ वज्र पूष्य स्वाहा ॥ धूप
 ॐ वज्र धूप स्वाहा ॥ दिय ॥ ॐ वज्र दिय स्वाहा ॥ नेवद्य ॥ ॐ वज्र नेवद्य स्वाहा ॥ लाः
 जाऊ न ॥ ॐ वज्र लाजाय स्वाहा ॥ स्वान जा किलख सधूना ववलि सुमय ॥ ॐ अ
 काजी मूरव सर्वधर्मा नामाश्च नूत्पं नत्वा ॥ ॐ अ ॥ हुं रुट् स्वाहा ॥ वलि अ धिष्ठा

न॥ ओं सुप्रतिस्थितवत् स्वाहा॥ मधुलाधिष्ठान॥ ओं आ० हं॥ मंत्रसाधन॥ पून० पात्र
 मूल्यतां लावयन्॥ जीं का नैष पद्म हां ऊ नं मौ का नैष मा म कि कृष्णं दिनु जां वज्रवत्
 हंसां हं का नैष ओं ला कृष्णं दिनु ऊ वज्रवत् हंसां न तं सम्यग योगमहा नां
 ननु विरुणय (व्यग्न॥ पून० ह० हां धीं अं स्वाहा॥ ओं सर्वदेव कामिनी सर्वहृत्
 (अधनी गुह्यवद्विही कोरध्वनी सर्वदयया पिठारि (अधय रहै॥ अकार अमृ

३

नं अमृगं प्रवर्णय हं॥ न नवा महसु संप्रकुचिता॥ त्रिभुंगुली पटाक हंसा न हं मित्र
 धिष्ठान॥ ओं वज्रहं मं हं॥ चतुर्विंशतिभुंग न्याण॥ यू॥ कयाल॥ जां॥ च सुपोल॥ ओं
 ऊ वक्रमयं॥ ओं॥ मिखागा॥ (अं॥ दया क्रस्यै॥ लो॥ ज्ञानिका॥ दं॥ मिषात्रियां॥ मं
 वाहनियां॥ कां॥ या का नियां॥ ओं॥ दू इमियां॥ प्रं॥ नं हं॥ कां॥ ज्ञाय राका॥ कां॥ वा
 ल॥ लं॥ कथू॥ कां॥ नूग॥ हि॥ चययाथा॥ प्रं॥ सिंग॥ गुं॥ यं च्या॥ हां॥ वयानि

प्रां॥ सु॥ त्वां नमिषु॥ ने॥ पालिपविनिषं॥ सि॥ पालिनिषं॥ मं॥ लाहडूला निषं॥ कुं॥
 पूलिनिगलं॥ ओंपि॥ अयधि॥ अऊं॥ यऊं॥ दायरुदा भलायका भलायक॥
 धन नायधममानानि॥ हूं॥ स्वाचर्य॥ गभाजंग न्याथ॥ ओंह॥ हृदय॥ नमः॥ हि॥ सि
 प्रसि॥ स्वाहाहूं॥ मिथा॥ वाघरुह॥ स्वबंधदय॥ हूं॥ हूं॥ हा॥ भद्रदय॥ रुट्रुट्रुहूं॥
 सूर्यगिरि॥ ओंवै॥ नारो॥ होयो॥ हृदय॥ डोंमावेकुं॥ ऊंकी॥ सिप्रसि॥ हूं॥

मिरवनिपां॥रुट२॥सर्वगवू॥आसन॥ॐस्थानमत्रकुहं॥नोहनिश्वं॥ॐश
गमत्रकुहं॥विजसि॥ॐआत्मानमत्रकुहं॥नरुस्वहृदयवृकात्रहचतुन
धुतायत्रिकुषूहंकात्रेआ॥कात्रजक्तुॐकात्रशुक्रंहंरुटकात्रां॥आलिकात्रि
पकिणय॥शुक्रजक्तुहृषूवर्धुमुवाय्यरुदकुत्रपजिनरुचक्रयज्ञवद्ववाक्वि
शुद्रिंकुयां॥पूषरुधवेआसनवदनारुधवउसूर्यसहस्ररुधपद्मनृ

धृष्यसेत्का नस्कं (धवज्जनाज विरानस्कं (धवज्जसुवः त्वनथा गनत्व श्री हनुक
 वडं ॥ वडु धा मा वडी (धनया ध वडी घानय निष्ठा वडी वकु था जाग व
 जी. स्यर्ण मा यं सू र्य वडी सर्वाय ध वडी ॥ पृथ्वी धा गुपाननी आय
 धा गु मानिनी नजी धा गु जा क धडी वायू धा गु य स नृ ध वडी जा का ण धा गु प
 झ जानडी ॥ पचस्कं ध ह का न दे व ना ठू नि ॥ पू न ना आलि कालिय किम धन

का नैय निशानं सूर्य मधुलम (ध हं का नय निशम मेश रु ग वं नं क सु वरू ष गु रं प
 धम गु जा र्था वडु वडु धे धा धनं दि गिया र्था ख ड्ग न ड्ग नि पा रं रु गिया र्था ठ
 म नू ख द्वा ग धनं च नु मू र्वं क सु वा म ध धा म पृ थू न क द डि (धा पी नं विहा व्यः ॥
 हं नो म च नु मू र्वं स्थि ता सं ला दि च नु जा नै ॥ नो नो त्य न च नु दे व्यः का का ध
 दि रु वि दि रु पूर्वा दि न या न मि पू र्ज न य म जी ग्या दि ॥ दो दो व र्मा नि आ गी य द

ॐ वामहस्तसंगुष्ठमङ्गीर्यां क्षाति कोदत्वा ॥ ॐ शृङ्गमिहं हं हं हं ॥ ॐ गृङ्ग
 हं हं ॥ ॐ गृङ्गापयश्च हं हं ॥ ॐ ज्ञानयश्च हं हं गवन्विद्याज्जहं हं हं ॥ काका
 वध कृष्ण ॥ उल्का वध ॥ ॐ स्वा नालयत्ता ॥ गृङ्गलास्या ॥ नाय जगि कृष्ण
 पिता ॥ यमदूगिपित ॥ ॐ यमदृष्टी जगत्ता ॥ यममधनी ॥ यममह ॥ यम
 नादयाया वामहस्तकपालपा ॥ यममहसंज्ञा ॥ कीलन नामेय वगुलाफ

७

नउद्यया मन्त्रयकं धृत्वा ॥ दक्षिणहस्त कर्त्तुं ॥ यममहसंज्ञा ॥ यममहसंज्ञा ॥
 नदन्त्रयकं धृत्वा ॥ दक्षिणहस्त कर्त्तुं ॥ यममहसंज्ञा ॥ यममहसंज्ञा ॥
 नायवस्तुलाप्रमाणा वज्रवह्नि का नृपे जगन्धगनो वज्र ॥ गीतमीविराव ॥ ॐ भेद
 निवज्रीरुपवज्रवैध हं हं हं ॥ ॐ वज्रप्रा ॥ जहू वै हं ॥ ॐ वज्रपेज्जप हं पं हं ॥
 ॐ वज्रव न हं ॥ ॐ वज्र ॥ यज्जालां ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ वज्रका ॥ यज्जालां ॥ ॐ ॐ ॥

दिग्देधन॥ या का नवकीहं का अनिधं नखजुष्ट सुक् पयुनिवर्णिता॥ ॐ उदि
 विघ्ना नो हृदय कीलकं धृत्वा वज्रमूज नमः कोटयत्॥ ॐ घघ घा गय श सर्वदुष्ट
 न हं रुट्॥ ॐ कीलय श सर्वपापा न हं रुट्॥ ॐ वज्र विलय वज्र धन जा अप
 यति सर्वविघ्न विनायका नाकाय वाक्चित्त वज्र न कीलय हं रुट्॥ कील
 नमं॥ ॐ वज्रमूज न वज्र किलय मा को नय श हं हं रुट्॥ आ कोटय मंग॥ ॐ

१

निर्विघ्न हावयग॥ ॐ नि नकाय वज्र व ना विधि॥ नमः सहृदय सु हं का न न
 मिहि ॥ उ ग द र्थं कृत्वा अ कनिष्ठ कु व नंगत्वा न सुख्य न नादि सै सि द्वि श्री ह
 नू कं रु ग व नी समापन मं उ ले यं प ॥ नमो हृ दी ज न मिम मा ला हि जा वृ ष
 ला न चक्र मा का ण दे र ण हृ द्या अ हि मूर्ख म हि सै यू अ स मं न स म य मं उ ले प्र वं ण
 न स म न्री स कृ ष म नाम यि हि ॥ पूजा दे वि हि थं स ज य न्॥ डाल मू द्रो द र्थ य

ग॥ हूं॥ ३ ॥ ओं श्री वज्र हं नृप वन सुत्का नाय पाश भूमि आचमनं पुनिकु स्वाहा ४३
 : हूं वे हा ४ ॥ पूष्या सा ४ ॥ ओं श्री वज्र हं नृप क हूं हूं रुट् अकिनी जाल सम्म
 नै सा हा ॥ हं दय मंत्र ॥ ओं श्री ३ हं ४ हं ४ हूं हूं रुट् ॥ उ यह दय ॥ ओं वज्र वे श्री
 चनी य हूं रुट् ॥ दया हं दय ॥ ओं सर्व वृद्ध अकिनी य हूं रुट् ॥ दया उपर
 दय ॥ ओं अकिनी य हूं रुट् ॥ पू ॥ ओं लोभ हूं रुट् ॥ उ ॥ ओं स्वतु ना हूं रुट्

रुट् ॥ य ॥ ओं नृपिनी य हूं रुट् ॥ द ॥ ओं निदिक् ॥ ओं वाधिरिं प्रासृक लो ३
 हूं रुट् ॥ ओं निविदिक् ॥ ४ ॥ पू ॥ ओं कन २ प्रच (हूं रुट् ॥ उ ॥ ओं कन २ प्रच
 हि य हूं रुट् ॥ य ॥ ओं वंध २ प्रलम नी य हूं रुट् ॥ द ॥ ओं प्रो भय २ माग ना ली
 हूं रुट् ॥ भू ॥ ओं क्रा ह्य २ विप्र मति य हूं रुट् ॥ नै ॥ ओं क्रां क्रां स्वकी लय हूं रुट्
 ॥ वा ॥ ओं क्रां क्रां लोक धनी य हूं रुट् ॥ ० ॥ ओं क्रां २ दु मरु य हूं रुट् ॥ ओं विचि

रुचक्र ॥ पू ॥ ओं रुद्र २ जे जावति यहूँ रुद्र ॥ उ ॥ ओं दह २ महा हे जवी यहूँ रुद्र ॥ प ॥
 ओं पव २ वायू वरगहूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं रुद्र २ वसुधै शान्तमाला वलं विनसु जाहकि
 यहूँ रुद्र ॥ ज ॥ ओं गृह २ सप्तपानाल हृदंग सर्प वा नर्तय २ धामा देवी हूँ रु
 द ॥ ने ॥ ओं आकश २ सूर्य हूँ रुद्र ॥ वा ॥ ओं श्री २ हय कर्ण हूँ रुद्र ॥ ॐ ॥
 ओं ॐ २ स्वगमन हूँ रुद्र ॥ ॐ निवाक चक्र ॥ पू ॥ ओं ॐ २ चक्र वेग हूँ रु

२

द ॥ उ ॥ ओं हौं हौं स्वस्ति हूँ रुद्र ॥ प ॥ ओं श्री श्री शोभित यहूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं
 हूँ हूँ चक्र वर्मनी यहूँ रुद्र ॥ ज ॥ ओं किमि २ सुवी यहूँ रुद्र ॥ ने ॥ ओं सिजि २ स
 हो वल हूँ रुद्र ॥ वा ॥ ओं हेति २ चक्र वर्दिनि यहूँ रुद्र ॥ ॐ ॥ ओं धिपि २ महा
 विर्य हूँ रुद्र ॥ ॐ निवाय चक्र ॥ ॐ ॥ पू ॥ ओं काका २ हूँ रुद्र ॥ उ ॥ ओं उ
 लूका २ हूँ रुद्र ॥ प ॥ ओं स्वा ना २ हूँ रुद्र ॥ द ॥ ओं ठूक ना २ हूँ रुद्र ॥ ज ॥

ॐ यजति यहुं रुद्र ॥ ने ॥ ॐ यमदूनी यहुं रुद्र ॥ वा ॥ ॐ यमदुष्टी यहुं रुद्र ॥ ॐ ॥ ॐ
 यममन्त्री यहुं रुद्र ॥ ॐ यमकाश्यागिनीमंत्र ॥ ॐ यमयहायस्वाहा ॥ पू ॥ ॐ ग
 कलायस्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ कालांकलायस्वाहा ॥ य ॥ ॐ कलंकहेत्रवायस्वाहा ॥ द
 ॐ नृदृहासायस्वाहा ॥ भू ॥ ॐ सुवनहूनासनायस्वाहा ॥ ने ॥ ॐ धीर्माध
 कायस्वाहा ॥ वा ॥ ॐ किलिशलात्रवायस्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ वीषवाजदूता ॥

१०

धात्रलाठध ॥ ॐ वज्रविनहं ॥ ॐ वज्रवेणवा ॥ ॐ वज्रमृदलकी ॥ ॐ वज्रमूर्ज ॥ ॐ वज्र
 लालहं ॥ ॐ वज्रमाला ॥ ॐ वज्रगीर्णकी ॥ ॐ वज्रनृगज ॥ ॐ वज्रपृथ्वी ॥ ॐ वज्र
 धूपग्री ॥ ॐ वजावलीकिर्णकी ॥ ॐ वज्रगंधध्वज ॥ ॐ वजादर्शनहं ॥ ॐ वज्रसुवर्ज
 ॥ ॐ स्वर्णवर्जकी ॥ ॐ धर्मधनुर्वर्ज ॥ ॐ वज्रवाद नमस्तुते ॥ ॐ वज्रसुत्वसंश्रुहा
 न्वज्रनत्नमनूजं वज्रधर्मगायिने वज्रकर्मकूलोद्भव ॥ ॐ टक्किजहूं ॥ ॐ टः

किं जात हो ॥ सर्वज्ञ हान संसाहं जगदर्थ प्रणम दमं ॥ चिंता महिनि विवर्द्धनं श्रीसम्भ
 ननमोस्तुते ॥ व्यापुर्विष्णु महान्न नं सर्वभिनि सुदास्विनं ॥ कृपाकोट महान्नोद
 श्रीसम्भ ननमोस्तुते ॥ ॥ मन्त्र नयं ॥ ॐ नमो भगवते वीरवी प्रणव जाय हूं
 हूं रुट् ॥ ॐ नमो महाकल्याणिन संनिताय हूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो भूय मकुटोत्कट
 हं नवाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो भूय कालाग्रे हि वश सुखाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ सुह

११

अहं जलस्व जाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ माहाधूमो धका जवपूत्राय हूं हूं रुट् ॥ ॐ व्या
 घुचर्मावे जध जाय हूं हूं रुट् ॥ हंसपूजा ॥ वा मकज मल्ल जलपंच दल कमलं च
 त्वा ॥ पूष्यं न्या ॥ ॐ वं वज्रवा जहीय हूं हूं रुट् ॥ ॐ हों यों यामिनीय हूं हूं रुट्
 ॐ कूं भों माहिनीय हूं हूं रुट् ॥ ॐ कूं कों सें वाजिनीय हूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं हूं सें
 ण नीय हूं हूं रुट् ॥ ॐ रुट् १ चक्षुकाय हूं हूं रुट् ॥ ॐ हवजुस्त्वाय स्वाहा ॥ ॐ

नमहि वैजायनाय स्वाहा ॥ ओं स्वाहो हूं यमनृत्यं वजाय स्वाहा ॥ ओं वायद् हं ज
 त्सं हवाय स्वाहा ॥ ओं हूं हूं हो वज्रसूर्याय स्वाहा ॥ ओं रुद्रं यमं वज्राय स्वाहा
 कजमूदिमं स्थापयित्वा ॥ यै चोपवाजपूजा ॥ कल्याणप्रणवामलाधिकक
 जाकालावली छागृहा स्वदीगिप्रमुखी महासुखजनावाजा कविंवा नूह ॥ या
 मि सर्वजगद्गुणोदयपजा श्री वज्रवाजहिका ला वनप्रनमामि सुकु नूजपीथी

१२

वज्रनृत्यमिने ॥ यामि न्याखलू भाहिनी हगवती सं चात्रिनी सर्वदा सैरा सिन्यन
 थापना सुविमला योगध्वनी चक्षुका ॥ चत्वा ग्राहकानुक्खान नवजास्यामा
 सिना गमेजिनीः स्यामाधुमुत्ताथ सुगमं वेदनांदवं ॥ देव्या नयं ॥ ओं नमो ह
 गवर्गवं वज्रवाजा ही यहूं हूं रुद्र ॥ ओं नमो हगवर्गं हो यां यामिनी भुक्तिनयन
 मिना लोका मा न न हूं हूं रुद्र ॥ ओं नमो सर्वतुल्य हयावहं महावज्र हूं हूं रुद्र

[illegible]

नाकृत्तकात्रिभूमादिभूमयमश्विननिहितदायानांप्रतिदंशयामि॥ पूज
न४ पूजययनं संवतं विप्रध आवकस्वर्ग किं नाकृत्तमजिनसूतसैरु नानि कूसल
नीजूनूमादिनानि वारधोसुम्यकृपत्रिधमया श्वयजिन जलादिप्रितयणज
हं यावद्गतास्मिन्सर्वलावदाथर्षायादिहि ४ सर्वलावेन वाधिचिदरध॥ जूनू
नमार्गनवाश्ववेनि॥ जूति आदियागपुथमसुमाधि ४॥ ॥ गदनूमेगीकनू

गममृदि ना पडाः ॥ नमिचतुवमविहा नं विहावा ॥ ॐ स्वरावगुचा सर्वधर्माहं
 लावगुचा हं ॥ ॐ न्यतां रूप नवदुस्वलावा नमका हं ॥ विप्रमातुं कुवेति सुतवा
 धिसंला जयू जहात् ॥ न नापुहिवा नवधनं ॥ ॐ न्यता नीपतिवृद्धा ॥ येको न
 लवापू मंजुलं नीलधन्वा हं ॥ नदयत्रि नंका नहा नृजिमंजुलं गिकोर्क्षी ॥ नदप
 जिली का नहा पृथ्वी मंजुलं चतुर्ध्रं पीनवर्ध कोर्क्षी वृष्टि शूकवजां कि न ॥

१४

नदयत्रि सुंका नहा सुमंजु चतु जलमयं चतु जधम हृष्टं रग परध हिनी ॥ न
 दयत्रि सुंका नहा कुटीगा नं चतु जधम चतु जहा नहा रग हिनी महाभा
 जयू नं नोवन स्वला वैहा जाद्व हा नवकुलिक मणी र्वय मं न ॥ नदयत्रि यं
 का नहा विषय नं नम र्ध हं का नहा विस्ववर्ध न चर ध यं जा न विषय द्या सुद
 लं ॥ नदयत्रि आलिकालि दिगुरा न चतु मंजुलं सूर्य मंजुलं च न यार्म र्ध भा

95

धत्रीर्षा दण्डुर्जालिङ्ग ननु ऊच यत्र वदु वदु घं भधर्षं दि नित्य हज
द यत्र न गऊ चर्मा वत्र धर्षं कृ नित्य ऊऊ दय ऊम नूख द्वांग धर्षं च नु य ऊऊ द
यत्र कर्त्ति जत्तं पूरु कियाले धर्षं पंचम ऊऊ दय न पत्र गुया धर्षं व नू म
ऊऊ दय न त्रिगूल वृक्त णि त्र धर्षं ॥ सृष्ट्यै वा न न ज सि ज धा ज र्षा व्याघ्र च
मर्ति वा सने गृं ग म न वी त वी ल त्सू रा ण्य नो दु ल यी न क क नू द म हू न ग र्षे ति

नवनाथ जसोचिंतं कष्टिचूचक केयूजणिजामशियहोपवीनरुसाशनी॥षट्
 मूडामूडिगजविमधुलवामदक्षिणात्तरगयनिगहेजवकालजाग्रीवामकरधु
 नननयूगलया॥आलीछासुनसंस्थिनीलगवीनलवयन॥लगवतिवडुवाग
 हिजक्तवधूमूक्तकेणप्रिनेप्राचकवकुादिगवना॥एवंधुमंतिनकट्टिमरव
 लादिजुजावामरुजननक्तपूर्वकपालधनदक्षिणाकुजनहृष्टनर्जमीक

१७

दिफाश्ववधुधिजाननाजंघादयनरुगवंगंस्मागुञ्जनुजागयंतिरुगव
 गिलावयन॥गगसमयचक्रैरुजुजीकांनविष्णुदलकमलीस्वनूय
 माहंरुमधुलापूठंविष्णवधुप्रिचकैकनूर्यशीकात्राधिष्ठितंजलावलिय
 प्रिवृनंमहासुरवकायात्मकैचिरुवाक्यस्वरुवयन॥गगपूर्वदलजकि
 नीनीलाउरुजयप्रलामाहत्रिगापश्चिमयप्रखधुगहाजक्तादक्षिनप

अं नृपिणी पीता मा सुगवा नृ राज न स्थिता एक व कुच नु र्गुणा वा म कपाल
 ख द्वांग द डि ॥ १ ॥ अ म नृ क र्ति का उ सु क जाल न द ना गि न ग्रा म नृ क के ण यं व
 मूडा विहृषिता ॥ विदिग्द लेषू च त्वा वि वा धि वि रु क पालिनी ॥ न द्व हि चि
 रु च क्रुं का न ऊं अ स्था न माय म सुला नू रं रु सु ह का ना धि सि गं व जा व
 लिय जि व नं ध र्म का या त्म के स्व र्ग नृ पे ध च जि स्व ला वं चि न य न् ॥ नृ प्य

११

ऊ पूर्वा नृ पू ली ल म ल य ख सु क या ली गि ना च सु द द्या अं ऊ उ रु जा नं जाल
 ध नं महा कै काल च सु की द द्या ॥ अं ऊ य णि ना न व द्रि या न के का ल प ल
 म हि ॥ अं ऊ द रु म नृ ज र्व द वी क र ड द्रु शि ॥ महा ना ण ॥ नृ नि पि ० पु म
 दि ना ह मि दा न या न मि ना इ ॥ ख रु नै ॥ रं अं ऊ आ र न या न रं म ठा व र्या सु जा
 वि नी ण वी न म नी ॥ अं ऊ नै मृ न्या न न म ण्य नै नृ मि ना ह ख र्व नी ॥ दं ऊ

वायुव्यानदवीकाटवउपल्लंकेष्वनी॥सांऊंळीकृत्राप्रमात्रववशुद्ध
डूमाद्याय॥ॐमिठपपी०विमलाहमिणीलपानमिनासमृदयज्ञानी॥ॐ
गिचिरुवऊं॥गगलुकाहवाकृकंआकात्रनिर्जागंमसूत्रैर्गंआमद्युलानु
ठेनूकाधिष्ठिनीनक्तयशावलिपत्रिवृगंसीलीगकायात्मकंमनस्वलावी
हचानिस्वलावयन्॥गडुकांऊंपूर्वात्रकामत्रयजुकुलीकमंभावगी॥ॐ

[illegible]

निव्या न पात्र मिता कु य रूपे ॥ फोंर वायू व्याज कोचि महा लजवह यक धर्म ॥ ३॥
 केने मना अहि मालय विनू या कु खग न ना ॥ ॐ नू प रं दा मूर्दु र्ज या रु मि
 प्ररुपात्र मिता ज नू त्या द रूपे ॥ ॐ नि वा कु कु ॥ ग ग ४ वा हू का ये च कु ॥
 ओं का न र्ज जू द्या न वा यू नं उला नू र्दं शु क क का ना धि विरि रं च का वलि स
 म लै कू र्ग नि र्मा ध का या त्म की पा ना ल स्या वं पा ना ल वा णि नी स्व स्व र प

१८

हा व यन् ॥ न न स्य प्रं र्ज पूर्वा न पु न पू र्यं मि हा व लं च कु वे गम ॥ ॐ उ र्ज
 न गृ ह दे व ना या ज त्र व कु र स तु ग्रा हा ॥ ॐ नि धे ला य क र्ज ग मा रु मि उ पा य
 या ज मि ता ध र्म रूपे ॥ ॐ र्ज य धि मा र्जो ज र्ज ह य गृ वे शे र्ज नी ॥ ॐ र्ज द
 जि हा न र्ज व धू वि गं ज्रा का ग ग रं च कु व र्मि नी ॥ ॐ नू प र म ला य क र्ज च लो रु
 मि प्र सि धि या ज मि ता न्व य रूपे ॥ नै र्ज भ्रा र्ज ना ज र्जो र्ज क र्ज वा नै ॥ मि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 लपा नमिता संवृद्धिस्तन ॥ ॐ नमो वायुवाय नमो वैश्वानराय नमो चक्रवीर्यनि ॥ कूज ॐ
 नमो नमो कलनाया वसुदेवाय महाविद्याय वयम् ॥ ॐ नमो भगवते धर्ममया ह
 निस्तनपो नमिताय नमिस्तन ॥ ॐ नमो कायचक्र ॥ रवेष्टुकपालादया वीजो
 चक्रवक्त्रा चक्रुस्तन ॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥

२०

वासुदेवाय नमः ॥ दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं ॥
 प्रचक्षुः दिदद्या चक्रवक्त्रा दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं दक्षिणं ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
 वयम् ॥ ॥ नमः पूर्ववार्त्तकाका नमिस्तन ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥

गा. यथि मदा नमः नाथ्य जक्ता. दक्षिण द्वा र शक ला ध्या यि ना ॥ आरु नय नी
 अग्नी वायु र्ध्व जेष्ठा न का र हा व ॥ यम दानि ला र्ध्व पि काः यम दू वि धि न जक्ता य
 म उ द्दि न क ह रि ना यम म थ नी ह रि न नी ला त्ता व ध न ॥ पु का या गि न्या उ
 क व कुा व रु र्जु प्र ग्ना ली ता स मा स ना नि व स ना पंच मू डा वि रु धि ना. क
 पा ल र व डां ग वा मं च. द क्षि ण उ म नू र्ध्व दि का उ द्दि क ला त व द ना वि ल य

२१

ॐ आ ४ हूं ॥ गि ज कं ० ह द यं क मे हा वि ला व. स्व र्ग म न्द्र पा ना लं च क म्ति ह वं कु
 मा न् ॥ म न ४ पु र्व व द ग न्या ण ४ ॥ ॐ आ ४ हूं स र्व वी ज या गि नी का य वा क चि न्
 व र्ध स्व रा वा त्म को हं ॥ ॐ व र्ज सृ ज्ञा स र्व ध मा ना व रु णु डा हं ॥ स मा वि न र्म न
 च क मा का ष द र ण इ द्वा ॥ ऊ र्ध्व वं ही ४ ॥ आ त्म नि मं ज लं वृ वां क य ४ या ग णु
 द्वा स र्व ध मा नी या ग णु डा हं ॥ ग द नू र्ध्व दि र्ध्व च नु मां स र्व वी ज या गि नी छी

हं नमः वरुण स्वरावात्म को हं ॥ यथा हि जाम माश्रितः शस्त्रा पिता सर्वतथा गता ॥ सु
 धर्मा हं त्वाप यिष्यामि शुद्धिं दिव्यं नवा विदमः ॥ ॐ शुभं सर्वतथा गता जूहिषि
 कस्तुमाश्रितः यद्दुः ॥ गताम कृता ॥ जूहिषि कर्म महावर्तुं धेनुं कर्म नमः ॥ द
 दा ॥ सर्ववृद्धं नं गिगुह्यालय सं हवं ॥ ॐ दंत सर्ववृद्धा नीयूषा की पूजना
 यवः ॥ मकृ दपंच कुली हवं ॥ ॐ सर्ववृद्ध चूग मशि महा मकृ तं पुनि ह्व

२२

हा ॥ पू ॥ ॐ वरुणः श्वेति जूहिषि च ह्वं ॥ द ॥ ॐ वरुण वरुण नीय जूहिषि
 च ह्वं ॥ य ॥ ॐ नल वरुण जूहिषि च वरां ॥ उ ॥ ॐ धमे वरुण न जूहिषि च वरां
 ॥ मेध ॥ ॐ कर्म वरुण न जूहिषि च वरां ॥ ॐ गि मकृ टा हिषे क ॥ जूशा हिषे
 कत्वमसि वरुण ॥ वरुण हिषे क न ॥ ॐ दंत सर्ववृद्ध त्वं कृ त्वं वरुण सिसृक्षवा ॥
 वरुण ॥ ॐ वरुण धिपती त्वाम हिषे चाभिनि वृ वरुण सम यस्त्वं हो ॥ वरुण वरुण

ज३ ज३ ज३ ॥ य३ ॥ व३ स३ त३ त्वा३ म३ रि३ वि३ चा३ वि३ व३ शु३ ना३ मा३ हि३ र्दे३ क३ न३ ॥ ह३ श्री३ ह३ नू३
 क३ ना३ म३ न३ चा३ ग३ न३ त्वं३ जु३ र्ज३ व३ स्व३ ॥ ना३ म३ ॥ व३ शु३ स३ त्वा३ सं३ ग३ रा३ द्वा३ ज३ त्वा३ म३ नू३ न३ व३ शु३ ध३
 म३ ग३ हा३ मि३ ने३ व३ शु३ क३ र्म३ क३ ला३ ॥ वं३ ॥ ज३ ला३ लि३ ग३ न३ मू३ डा३ ॥ ओ३ श्री३ ह३ ह३ नू३ क३ व३ शु३ स्व३ त्वा३
 वा३ म३ की३ ह३ ॥ पु३ न३ ३३ ज३ क३ र्म३ धा३ पू३ र्वा३ न्या३ ग३ ॥ यं३ च३ प३ चा३ ज३ पू३ ज्ञा३ ॥ घ३ शु३ वा३ द३ न३
 म३ गु३ मि३ ॥ श्री३ च३ क३ र्म३ न३ म३ न३ स३ म३ न३ व३ शु३ दा३ क३ वी३ न३ वी३ न३ ध३ वी३ पु३ व३ न३ वी३ ज३ ग३ ह३ म३ धि३ न३

२३

ॐ ॥ कालाननाललितावाहूयूरामपशूकानूधनिर्जनमामिपजांघ्रिपश्री
 ॥ १ ॥ शार्ङ्गकलस्यरुववंधनहृदकानिविस्तरात्रिभूद्रप्रजिष्ठुक्षणविजयम
 प्रवृष्टशेषद्रुमिनामलकाधनूयंसंपूजनीमिगवपादसजाजनेहू ॥ १ ॥ ॐ मिमं
 दुलनाकुशीनामदिगीयसमाधि ॥ ॥ न३ न३ ३३ ज३ ला३ लि३ कालि३ य३ त्कि३ यं३ च३ म३ मि३
 का३ ल्क३ न३ द३ व३ मा३ वृं३ दा३ नू३ द्या३ न३ यं३ न३ द३ कि३ मा३ वा३ यू३ ना३ नि३ स३ म्य३ ऊं३ ग३ वि३ च३ की३ क३ न्य३

नादि संसिद्धि वीज नीस म नगीर नां वा म ना सा पूर न प्र वं स ना लो प्रति विं व
 ग स्वा हा का ने चंद्र मी जलीर नां वि विं ग्य न गु अ ठि मी गुं कू रूं का र्ज न स गु वी ज प
 वि ठा ग ह ग वी न स ह म स व र्ज गु क व र्धु माली ठा स न स्थ ना का ण लि रि न चि
 कू स ह र्णं दि हू र्ज क व र्क व र्धु व र्धु य धू म ध र्ज ॥ मू ह या ल्यां व र्धु क पाल धा जि
 धी दि हू र्ज क मू र्खं न ह व र्धु व र्धु वा ज ही मा लो न वि ल व्य ॥ न यो मा या

२४

सून न धनि मा कू कू धा गु का ल म क व कू क म द ला व ये नू ॥ रू ग कि ष्म ण
 ना नि स म य व र्क स म य व र्क का य व र्क का य व र्क वा क व र्क वा क व र्क वि
 कू व र्क वि कू व र्क वा कि नी षू वा कि न्वा द था य थ य थ म षू वी रू मू ह ग व
 नू मू र्खं ह ग व थो दि हू रू ग ल पु रू म्पा ४ पु नि हू ला व नी या गे च स म य सून न
 मा हा ना ग उ वा य न्ने न द व प नि न र्म सिं हू ना न क्ता हा ल र्णं हू र्णं हू का र्ज म हा

[illegible]

जाय जाय ॥ तारिच नै रथ न ज क हूँ कानं नादा मी माला इत्या यस्व विनि
 न्य स्वनाह प्रविष्ट वज्र मा गप मी हित्या भव धु मि मा रार धम त्या यर गय
 नि मूर्खा नृ मृ न्य स्व मख द्वा जेश प्रविष्ट ना देव जि री पू न ॥ न स्मा दू न थ
 य सवर्ग शुभ विहा वयेन ॥ न गय ना र गव था मूल मी त्यां जाय या दे मि
 जाय विधि ॥ पूर्व व ॥ जाया पू म लं घं म मि न नी वाल माल ह न्ना वू

जगो पैका नक्ष वायु मधुर्ल गदुपत्रि नैका नक्ष जिन मधुर्ल नगुणुक्त ४ का न पत्रि
 दानुं कपमलाजन मधुगुनय वृत्ति कोय वैस्थि नैय अलाज नगुल्ला पिकें
 अंतां आं रं वं लौ मों पों नों वें का नजा धिष्ठि नै पं चामृ न पंच प्रदिप नू यं न वि
 व्याय वायु पुत्रि न छति नाग्नि ना पविलि दं विजा कुनादि कै मरि न व. लान
 वधु देव नू पै दृष्टा नदुपत्रि पा नद वधु विन सि मागं न वि नाहं ए वा ॥ धमूखा

२७

मृग मय शुं क ख दी गं विलि न न गि न द व पा न द व धू णी गि र नै च दृष्टा नदुपत्रि
 जालि कालि पत्रि हा नै ॥ अं आ ४ हं का नै था दू नू कम ना पत्रि नू क द व ना स
 विना कु ग द यं कृत्वा सकला मृ न स मानी य समा पत्रि पू र्वे क उ वी ह य ॥
 यथ यथ नै वृ वी ज वृ प्र निष्ठा ल व नी या ॥ न न ४ अं का जा दि कु मं ध वि लि
 नी म व ली क न्य कु नै ध धि ह्य प ॥ न गी जाल मू डा : व ध्या ॥ ए का न पूर्व

कैलगवर्गस्य विवातमाकर्षयन् ॥ आकर्षणमूत्रागारकृत्वांगुस्थीश्वराम
 रधशूरिभंगुश्वरजीहृत्संस्थायललनदंशजवर्द्धवर्द्धनहृत्त्वामयन् ॥ आ
 कांतपादोर्ध्वस्थिमूर्धिरुत्कांतनादनदंशदिग्गताकधामस्थमकर्षयन्
 ध्वजशशीनीनिपायादिष्वन्याशुपलंघ्यमुरुगगोत्रादिकालिय
 निधनचंदसूयस्वरावहनदयानर्हकारैहृत्तुन्यन्यानुगतासर्वव

[illegible]

हो॥ वज्रजकिन्धसुमयस्त्वं ह॥ हो॥ हगवस्तुह्य या जकिन्ध्यादिनी का
कासादिनी वज्रकयत्॥ ओं क न र कु नू र वध्य र वाण य र ऊँ र ऊँ र रु दू र द ह
र य च र रु रु र सु व प्र धि नो न मा ला व ले वि नै गृ क र स प्र पा ना ल ग न हू र्ज
ग स यै वा न र्ज य र आ क सु र ऊँ र रूपै र आँ र हौ र ऊँ र हूँ र ह्रि लि र सि लि
र सि रि र हि रि र धि रि र हूँ र रु दू र स्वाहा॥ हूँ मि म्रै यै यि च क दे व ना

[illegible]

॥ ॐ निधीहेतुकस्य संपूर्णचक्रमूर्खारण्यानपूजाविधिसमाप्तं ॥
सिलह २४८ ॥ शुभं ॥



